ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-10* November- 2017
Innovation The Research Concept

भारत की सामाजिक समस्याओं का गाँधीवादी समाधान

सारांश

गाँधीजी मानवीय जीवन को बाहरी आक्रमण के विरूद्ध अपनी सामाजिक समस्या से उभरने व स्वयं के हितों की रक्षा के लिए शिक्षित करना चाहते थे। वे भारत में सभी सामाजिक समस्याओं का शांतिपूर्ण निदान चाहते थे। ताकि प्रत्येक नागरिक को मानवता के प्रति भाइचाारे से रहकर अपनी प्रत्येक समस्या को सुलझाने तथा समायोजन करने का रास्ता मिल सके। गाँधीजी ने कहा है कि, प्रत्येक नागरिक को प्रत्येक समस्या को सुलझाने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। गाँधी जी का मानना है कि किसी भी सामाजिक समस्या का समाधान समाज के व्यक्तियों द्वारा मिलजूल कर ही किया जा सकता है। यदि समाज के सभी वर्गों के लोग आपस में मिल जाएं तो सभी प्रकार की समस्याओं पर आसानी से काबू पा सकते हैं।

मुख्य शब्द : द्वंद्व, भ्रातृत्व, केन्द्रीकरण, विकेन्द्रीकरण, आदर्श समाज, गाँधीवाद, सत्य, अहिंसा, राज्यविहीन समाज, गाँधी दर्शन, सर्वोदय, सहभागी, विकेन्द्रित लोकतांत्रिक राजव्यवस्था, सांस्कृतिक प्रदूषण, ग्रामोद्योग।

अशोक कुमार महला
व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान,
राजकीय महारानी सुदर्शन कन्या महाविद्यालय,
बीकानेर,राजस्थान

प्रस्तावना

गाँधी जी नागरिकों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व नैतिक समस्या को दूर करने की स्वतंत्रता समाज में चाहते थे। स्वतंत्रता को पवित्र वस्तु तथा स्वराज्य को सत्य का अंग मानते थे। गाँधी जी समाज में प्रत्येक व्यक्ति को समान मानते हुए मानवीय समस्या को सुलझाने का प्रयास किया करते थे। भारत में सभी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व नैतिक समस्या का शांतिपूर्ण निदान चाहते थे। ताकि प्रत्येक नागरिक को मानवता के प्रति भाइचाारे से रहकर अपनी प्रत्येक समस्या को सुलझाने तथा समायोजन करने का रास्ता मिल सके। हमें गाँधीवादी मार्ग पर चलकर इस उद्देश्य को पूर्ण करना है, जिससे समाज में बिना कोई भेद–भाव किए सामाजिक कार्यों को पूरा किया जा सके। सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहयोग और सद्भावना गाँधीवादी मार्ग दर्शन के मूल आधार हैं। मानवीय जीवन नाना प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है।

गाँधीजी ने कहा है कि ''मैं उस सांप से द्वंद्व युद्ध करना चाहता हूँ अतः मैं राजनीति में धर्म को लाना चाहूंगा।''[1] गाँधीजी ने राजनीति को धर्म से कभी अलग नहीं माना। सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह के साधन से भारत में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का संचालन किया। मनुष्य को चारित्रिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक बल प्रदान करने के लिए साधन और साध्य का चुनाव सार्वजनिक जीवन में किया जाना चाहिए। गाँधी जी प्रत्येक राज्य के लिए नैतिकता की भावना रखते हुए, जनता के नेता होते हुए भी उनके साथ समायोजन की भावना रखते थे। गाँधी जी ने कहा कि, ईश्वर में सजीव श्रद्धा से लक्ष्य की प्राप्ति सरल हो जाती है। 'ईश्वर में सजीव श्रद्धा होने का अर्थ है मानव–जाति का भ्रातृत्व स्वीकार करना। इसका अर्थ सब धर्मों के लिए समान आदर भाव भी है।''[2]

गाँधीजी ने सर्वसम्पन्न राष्ट्र की कामना करते हुए कहा कि हमें सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक, आर्थिक सभी समस्याओं से निकलने व समस्या को मिटाने का प्रयास करते रहना है। राज्य एक आवश्यक दुर्गुण है जो मानवीय जीवन के नैतिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक मूल्यों पर आघात करता है। हमें गाँधी जी के बताये हुए मार्ग पर चलकर राज्य से परे एक जनतन्त्र वादी समाज का निर्माण करना है और राजनीतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक व नैतिक आधारों पर राज्य को दूर करना है।

गाँधीजी राज्य को एक कुण्ठित शक्ति मानते हैं जो मानव के व्यक्तित्व के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। गाँधीजी ने एक आदर्श समाज की कल्पना की है। जिसमें बल प्रयोग नहीं वरन् नैतिकता की भावना हो तथा आदर्श समाज को विकेन्द्रीत आवश्यक इसलिए माना कि केन्द्रीकरण से थोड़े से मनुष्यों के हाथ में शक्ति होने से समाज में व राज्य में नैतिक, सामाजिक, आर्थिक व

राजनीतिक समस्या उत्पन्न होती है। अतः आदर्श समाज विकेन्द्रीकरण समाज होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का स्थाई समाधान निकालने हेतु गांधीवादी मार्ग की प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाना है।
2. भारत की सामाजिक समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान का अध्ययन किया जाना है।
3. मनव एक सामाजिक प्राणी है अतः वह समाज में रहकर ही अपनी समस्याओं का समाधान कर सकता है, इस सन्दर्भ में मानव की भूमिका का अध्ययन करना।
4. सामाजिक समस्याओं के सन्दर्भ में गांधी जी के आदर्श समाज की भूमिका का अध्ययन किया जाना आवश्यक है।
5. वर्तमान समाज में गांधीवादी मार्ग की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना

परिकल्पना के रूप में निम्न अनुत्तरित प्रश्नों का निर्धारण किया गया है–

1. गाँधीवादी मार्ग पर चलकर समाजिक समस्या को सुलझाने तथा समायोजन करने का रास्ता मिल सके, जिससे समाज में बिना कोई भेद–भाव किए सामाजिक कार्यों को पूरा किया जा सके।
2. गाँधीवादी मार्ग पर चलकर राज्य से परे एक जनतन्त्र वादी समाज का निर्माण करना।
3. सामाजिक समस्या का समाधान समाज के व्यक्तियों द्वारा मिलजूल कर ही किया जाना।
4. सामाजिक समस्याओं के संदर्भ मे गाँधीवादी मार्ग के विचारों के संदर्भ में अध्ययन किया जाना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र मूलतः द्वितीयक सूचना स्रोतों पर आधारित है।

गाँधीजी प्रत्येक नागरिक को उच्च स्तर की शिक्षा, अहिंसा एवं आत्म–सम्मान प्राप्त करने वाला बनाना चाहते थे। मानवीय जीवन को बाहरी आक्रमण के विरूद्ध अपनी सामाजिक समस्या से उभरने व स्वयं के हितों की रक्षा के लिए शिक्षित करना चाहते थे। एक आदर्श व सम्पन्न समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी विशिष्ट क्षमता के अनुसार समाज सेवा करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए, इसके लिए वे प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करना चाहते थे कि व्यक्ति भेद–भाव रहित, सत्य–अहिंसा एवं शारीरिक श्रम के आदर्श पर आधारित समाज को ग्रामीण सभ्यता व संस्कृति को भी अपनाएगा यही इच्छा गाँधीजी की थी।

गाँधीजी राज्यविहीन समाज की स्थाना करना चाहते थे। इसमें सभी व्यक्ति सामाजिक जीवन का स्वयं अपनी इच्छा से नियमन करते हैं, मनुष्यों का इतना अधिक विकास हो जाता है कि वे अपने कर्तव्यों और नियमों का स्वेच्छा पूर्वक पालन करते हैं। गाँधीजी ने यथार्थवादी होने के कारण इस बात को स्वीकार किया है कि मानव स्वभाव की वर्तमान स्थिति को देखते हुए पूर्ण आदर्श की स्थापना सम्भव नहीं है इसलिए व्यावहारिक दृष्टिकोण से उप आदर्श की कल्पना की गई। गाँधीजी का सामाजिक दृष्टिकोण भी अत्यन्त व्यापक है। इसे वे व्यवहार परक सिद्वान्त ही मानते हैं। सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में गाँधीवादी मार्ग के विचारों को अपनाते हैं। क्योंकि विचार जब किसी व्यक्ति की मर्यादा में कैद हो जाता है तो वाद बन जाता है लेकिन देश काल परिस्थितियों के अनुसार समस्या के निदान में रचनात्मक प्रतिभा की मीमांसा करते हैं व अहिंसा का कर्मयोग संदेश देते हैं, समस्याओं के दंश विचार वाणी व्यवहार के शुद्ध एकीकरण से ही खत्म किया जा सकता है। इसीलिए गाँधी जी कहते हैं गांधीवाद नाम की कोई वस्तु नहीं है न ही मैं अपने पीछे कोई समुदाय छोड़ जाना चाहता हूं। व्यापक रूप से गाँधी ने विचारों की प्रासंगिकता पर बल देते हुए 1931 के करांची कांग्रेसीय अधिवेशन में घोषणा कि, गाँधी मर सकता है लेकिन गाँधीवाद अमर रहेगा। इसीलिए जीवन की समस्याओं के संदर्भ में गाँधीजी ने गाँधीवाद का व्यवहार परक मार्ग बताया है।

वर्तमान समस्याएं व्यापक होती जा रही हैं। इस आणविक युग में मनुष्य जीवन की सामाजिक समस्याएं गाँधी मार्ग द्वारा ही दूर हो सकती हैं। गाँधी मार्ग के दो सत्य हैं, पहला, सत्य का प्रयोग, दूसरा, 'अहिंसा का संगठन'। गाँधी जी के शब्दों में ''अहिंसा पर आधारित समाज गाँवों में बसे हुए ऐसे समुदायों का ही हो सकता है जिनमें स्वेच्छापूर्ण सहयोग सम्मानपूर्ण और शान्तिमय जीवन की शर्त है। अहिंसा और घृणा दोनों हमारे हृदय में साथ–साथ नहीं रह सकते।[3] सत्य ही धर्म का पर्याय है। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं, कोई तक नहीं[4]। गाँधीजी के शब्दों में, अहिंसा पर आधारित समाज गाँवों में बसे हुए ऐसे समुदायों का ही हो सकता है जिनमें स्वेच्छापूर्ण सहयोग सम्मान पूर्ण और शान्तिमय जीवन की शर्त है।

मनुष्य स्वभाव से सामाजिक प्राणी है। इसलिए उसकी प्रत्येक समस्या को सुलझाने की स्वतंत्रता उसे मिलनी चाहिए। समाज में रहकर ही मनुष्य अपनी समस्या का निराकरण कर सकता है। अपने मानवीय सम्बन्धों को पूरा करने तथा समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने तथा भेद–भाव को मिटाने में वह अपने कर्तव्यों का पालन समाज में रहकर ही कर सकता है। भारतीय परम्परा में दर्शन का एक विशेष प्रयोजन रहा है, वह है, जीव और बह्म का साक्षात्कार, जिसे मोक्ष भी कहा जाता है। आदर्श मानव की कल्पना चाहे कितनी भी हो लेकिन यथार्थ मानव के वास्तविक स्वरूप का अध्ययन परमावश्यक है। ''गाँधीजी ने राज्य संस्था में विश्वास व्यक्त करते हुए एक आदर्श, अहिंसक समाज की कल्पना की।''[5] गाँधीजी ने विश्वास प्रकट किया है कि, ''लोकतंत्र का विकास बल–प्रयोग से नहीं हो सकता। लोकतंत्र की सच्ची भावना बाहर से नहीं, अपितु भीतर से उत्पन्न होती है।''[6] उन्होंने लिखा है, ''अहिंसा पर आधारित सभ्यता का निकटतम अभिगम हाल ही तक वर्तमान भारतीय ग्राम गणराज्य है। मैं स्वीकार करता हूं कि यह बहुत अपरिष्कृत था। मैं यह जानता हूं कि उसमें मेरी परिभाषा एवं अवधारणा की अहिंसा विद्यमान नहीं थी, किन्तु उसका बीज इसमें था।''[7]

सामाजिक समस्या से समाज का अधिकांश भाग प्रभावित होता है। जिस स्थिति का प्रभाव समाज के एक

बड़े भाग के लिए अवांछनीय या प्रतिकूल पड़ता है। वह स्थिति ''सामाजिक समस्या कहलाती है। पहले ब्रह्मविवाह के मौके पर पिता अपनी कन्या की शादी में रत्नाभूषण, साजो सामान, दास–दासी खुशी से देता था। लेकिन बाद में इसी प्रथा ने दहेज जैसी गम्भीर समस्या का रूप धारण कर लिया।

सरकारें निर्धनता, जनसंख्या नियंत्रण, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, निरक्षरता और आतंकवाद जैसी सामाजिक समस्याओं के हल के लिए योजनाएं बनाती हैं। लेकिन स्वैच्छिक संगठनों और समाज के लोगों की भागीदारी के बिना इन समस्याओं पर कभी काबू नहीं पाया जा सकता, इसलिए महात्मा गाँधी का मानना है कि सामाजिक समस्या, राजनीतिक समस्या, नैतिक समस्या व आर्थिक समस्या आदि को हर व्यक्ति अपना व्यक्तिगत अधिकार समझकर इन समस्याओं को मिल जुल कर सुलझाने का प्रयास करना चाहिए।

समाचार पत्र–पत्रिकाऐं, दूरदर्शन, आकाशवाणी तथा सिनेमा आदि जनसंचार माध्यम सामयिक समस्याओं को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक समस्याऐं इतिहास के साथ बदलती रहती हैं। पहले निर्धनता हमारे देश की एक बड़ी सामाजिक समस्या थी। लेकिन अब आतंकवाद की समस्या हमारे समाज के लिए बड़ी चुनौती है। जब समाज में अपराधी प्रवृतियाँ चरम सीमा पर होती हैं तथा तनाव, असंतोष, संघर्ष, सामाजिक आदर्श और अपेक्षिक व्यवहारों का उल्लंघन होता है तो ऐसी स्थिति सामाजिक समस्या होती है। सामाजिक पृष्ठभूमि से उत्पन्न होकर सामाजिक समस्याऐं समाज के संगठन और व्यवस्था पर गलत असर डालती हैं। गाँधी दर्शन के अनुसा समाज की जटीलता बढ़ने के साथ–साथ सामाजिक समस्याऐं भी बढ़ती हैं।

समाज में रचनात्मक ह्रास होने, समाज में विकृत प्रकार की स्थितियाँ पैदा होने, समाज के आदर्शों का उल्लघंन होने, लोगों में तनाव के कारण, संघर्ष की स्थिति से, समाज में अव्यवस्था फैल जाने से व समाज के लोगों में समायोजन और सामान्य सहमति का अभाव होने से, सामाजिक समस्याएं पैदा होती हैं। गाँधीजी के अनुसार जब किसी सामाजिक व्यवस्था में कई प्रकार के विभेद हो जाते हैं तो उस व्यवस्था में असंतुलन पैदा होता है। व्यक्तियों, समुदायों, संस्थाओं और अव्यवस्थाओं में भेद होने के कारण समाज के लोगों के आपसी हितों में टकराहट पैदा होती है। इससे सामाजिक समस्या जन्म लेती है। लोगों में स्वार्थ–संघर्ष के कारण सामुदायिक झगड़े क्षेत्रवाद तथा आतंकवादपूर्ण गतिविधियों जैसी समस्याऐं पैदा होती है।

वर्तमान युग में विज्ञान और तकनीकी आविष्कारों के कारण समाज में तीव्र परिवर्तन आया है। इस प्रकार समाज का तेजी के साथ विकास होता है। इन व्यवस्थाओं के गलत सामंजस्य के कारण ही सामाजिक समस्याऐं पैदा होती हैं। कम्प्यूटर क्षेत्र में प्रगति होने से बेरोजगारी की समस्या व औद्योगिकरण में वृद्धि हो जाने से अपराधों में वृद्धि तथा वर्ग–संघर्ष पैदा हुआ है। जो प्रतिमान समाज के उचित व्यवहारों को बतलाते हैं । वे खण्ड–खण्ड हो जाते हैं। उस समय समाज में सद्भावना, सहयोग, एकता और अनुशासन का अभाव अनुभव होने लगता है।

सभी प्रकार के अपराध, बाल–अपराध, निर्धनता, बेरोजगारी, छात्र–असंतोष, भाषावाद, जातिवाद, बाल–श्रम, वेश्यावृति, बालिकाओं की समस्या, नारी जीवन की समस्याऐं अथवा महिला समस्या, साम्प्रदायिकता, अलगाववाद, सांस्कृतिक प्रदूषण, मादक पदार्थों का तस्करी, कालाबाजारी, भ्रष्टाचार आदि समस्याऐं हमारे सामने हैं। जिस प्रकार एक चिकित्सक, चिकित्सा विज्ञान पद्वति के आधार पर रोगी का उपचार करता है उसी प्रकार सामाजिक समस्याओं का समाधान भी किया जाता है।

गाँधी जी का मानना है कि किसी भी सामाजिक समस्या का समाधान समाज के व्यक्तियों द्वारा मिलजूल कर ही किया जा सकता है। यदि समाज के सभी वर्गों के लोग आपस में मिल जाएं तो सभी प्रकार की समस्याओं पर आसानी से काबू पा सकते हैं।

एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था कि रचना करनी है जिसमें, न कोई ऊंचा हो और न नीचा, न कोई बड़ा हो और न छोटा, न कोई सुजाति हेा और न कुजाति, न कोई अमीर हो और न गरीब, सब एक समान हों, सभी भारतीय हो, सबकी आस्था 'मनुष्य एवं भारत देश की सर्वगुण सम्पन्नता' में हो, सब एक–दूसरे के सहायक हों, पूरक हों, और मानव–आवश्यकतानुरूप सबको सर्वोदय हेतु समान अवसर उपलब्ध हों।

गाँधी जी का मानना है कि नीतियों का इस प्रकार प्रतिपादन करना है जिससे कि–

1. गांव–समुदाय और कस्बा एवं शहर इकाई एकता, समानता, मानवता, आत्म–निर्भरता एवं प्रशासनिक दक्षता का एक उदाहरण प्रस्तु करें। गांधी जी को गावों की स्थिति सुधारने की सर्वाधिक आवश्यकता अनुभव हुई। गांधीजी ने ग्रामोद्योग के विकास को अपरिहार्य माना है। ग्रामीण जीवन को पुनः समृद्ध और स्वावलम्बी बनाना चाहते हैं। ग्रामोद्योग यदि लोप हो गया तो भारत के 7 लाख गांवों का सर्वनाश ही समझिये।[8]
2. राज–व्यवस्था, शिक्षा–व्यवस्था, न्याय–व्यवस्था एवं अर्थ–व्यवस्था इस तरह से एक–दूसरे से जुडी एवं घुली–मिली हों जिससे कहीं भी असमानता एवं अन्याय का दोष न घर कर सकें।
3. जाति एवं धर्म के नाम पर बन्दर–बांट के स्थान पर सबको एक स्तर का समझना एवं सबको भारतीय बनाने की ओर सक्रिय कदम उठाना।
4. राजनीतिक दांव–पेंच से जाति एवं धर्म को दूर रखना जिससे आपसी सौहार्द बढ़े और सभी एक–दूसरे के सहयोगी, सहायक एवं पूरक हो।

सन्दर्भ साहित्य विश्लेषण

आर.पी. मिश्रा ने गांधीयन मॉडल ऑफ डवलपमेन्ट एण्ड वर्ल्ड पीस, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली (1988) में वर्तमान प्रौद्योगिकी द्वारा उपजी समस्याओं का वर्णन किया है।

डॉ. दशरथ सिंह, ''गाँधीवाद को विनोबा की देन'' में गाँधीवाद और नव्य गाँधीवाद तथा कृपलानी, संत

विनोबा का ज्ञान सिद्वान्त व उनका तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है। इसमें सत्याग्रह, क्रान्ति, आंदोलन प्रक्रिया का अध्ययन किया है। शिक्षा से बढ़कर शांति स्थापना का कोई दूसरा अस्त्र ही नहीं। गलत विचारों के कारण ही समाज में अशांति फैलती है।

प्रो0 बी.एम. शर्मा , डा0 राधाकृष्ण दत शर्मा व डा0 सविता शर्मा, गांधी दर्शन के विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर (2007) इस पुस्तक में गांधी का सर्वोदय, सादा जीवन, न्यूनतम मशीनीकरण, ग्रामस्वराज्य, सत्याग्रह, अंहिसा आदि को वर्तमान 21 वीं सदी हेतु प्रासंगिक बताया गया है।

डॉ. रामजीसिंह, गाँधी दर्शन मीमांसा – इस पुस्तक में गाँधीजी ने सत्य और अहिंसा, उद्योग और संस्कृति, दासता व मूर्तिपूजा, कायिक श्रम, मानव विज्ञान आदि का अध्ययन किया है। गांधीजी ने अपने विचारों को इस प्रकार प्रकट करने पर बल दिया जिससे प्रत्येक व्यक्ति का हृदय परिवर्तन हो सके, वह समाज में समानता का व्यवहार करें।

मोहनदास करमचंद गाँधी, संक्षिप्त आत्मकथा– गाँधीजी– इस पुस्तक में गाँधीजी ने अपने सत्य के प्रयोग किए है, उसकी कथा लिखी है। उन्होनें अपने प्रयोगों का पूरा लेखा जनता के सामने प्रकट कर लाभदायक सिद्व करने का प्रयास किया है। आत्म कथा के अन्तर्गत गाँधीजी ने अपने जीवन का वृतान्त प्रस्तुत किया है।

डॉ. प्रभुदयाल जांगिड़ भारत में गाँधीवादी चिन्तन– सर्वोदयी चिन्तन के विशेष संदर्भ में (शोध प्रबन्ध)– इस में स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय चिन्तन की मुख्य धाराओं एवं उन पर गाँधीवाद के प्रभाव, विनोबा भावे के सर्वोदयी कार्यक्रम, लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा गाँधीवादी अवधारणाओं एवं सर्वोदय का व्यवहारिक राजनीति में योगदान की आलोचनात्मक व्याख्या की गई है।

आशा कौशिक, गॉधी नई सदी के लिए, रावत पब्लिकेशन, जयपुर पुस्तक में गांधी के सतत विकास सम्बन्धी विकल्प ग्राम्य जीवनशैली का सादगीपूर्ण, परस्पर जुड़ाव पर आधारित नैतिक, अन्योन्याश्रित समाज, स्वदेशी मूल्य व्यवस्था पर आधारित विकेन्द्रित, मानवकेन्द्रित अर्थ प्रणाली तथा सहभागी, विकेन्द्रित लोकतांत्रिक राजव्यवस्था के बारे में बताया गया है।

डा0 उपेन्द्र प्रसाद, गांधीवादी समाजवाद, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली (2001), इस पुस्तक में गांधी जी के द्वारा औद्योगीकरण को समाज में शोषण का मूलकारण बताते हुए स्वस्थ समाज निर्माण हेतु इस पर नियंत्रण लगाने की बात की गई हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि भारत की तत्कालीन समस्याओं का गांधीवादी समाधान एक कारगर उपाय है। गांधीवादी समाधान शांतिपूर्ण तरीके से एक स्थायी समाधान है, जो समाज को जनतंत्रवादी स्वरूप में स्थापित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *किशोरीलाल मशरुवालाः ''गांधी विचार दोहन'' नवजीवन पब्लिकेशन हाउस, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या 27*
2. *एम के गांधी : ''हरिजन'' 14 मई, 1938*
3. *एम के गांधी : ''हरिजन'' 17 अगस्त,1934*
4. *महाभारत : ''शांति पर्व'', अध्याय 162 पृ 40*
5. *गोपी नाथ धवन : ''सर्वोदय तत्व दर्शन'' नवजीवन पब्लिकेशन हाउस, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या 324*
6. *गोपी नाथ धवन : ''सर्वोदय तत्व दर्शन'' नवजीवन पब्लिकेशन हाउस, अहमदाबाद, पृष्ठ संख्या 310*
7. *एम के गांधी : ''हरिजन'' 13 जनवरी 1940*
8. *एम के गांधी : ''हरिजन'' 23 नवम्बर, 1934*